Name of the course :- BA Part III, Economics Hons.
Paper :- V (Development & Environmental Economics)

TOPIC - Non-Economic Factors of Economic Development
आर्थिक विकास के गैर-आर्थिक तत्व

Written by :- Dr. (Prof) Durganand Jha
COURSE - CO-ordinator, ECONOMICS, NOU

आर्थिक विकास में आर्थिक कारकों (तत्वों) के साथ-साथ गैर आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आर्थिक कारकों के मौजूद होने पर भी यह आवश्यक नहीं है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया सुचारु रूप से सम्पादित हो।

आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ के लोगों में विकास के प्रति जागरूकता तथा इच्छा हो तथा उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दशाएँ आर्थिक विकास को आरम्भ करने में उपयुक्त हों। प्रो० W.W. ROSTOW के अनुसार आर्थिक विकास-प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले गैर-आर्थिक तत्व निम्नलिखित हैं:—

1. आधारभूत विज्ञानों को विकसित करने की प्रवृत्ति,
2. विज्ञान का आर्थिक उद्देश्य में प्रयोग की प्रवृत्ति
3. नवप्रवर्तन अथवा नवीनता (Innovation) को स्वीकार करने की प्रवृत्ति
4. भौतिक विकास को प्राप्त करने की प्रवृत्ति,
5. उपभोग की प्रवृत्ति, एवं
6. स्वस्थ सन्तान की प्रवृत्ति।

प्रो० Ragnar Nurkse के अनुसार "A country is poor because it is poor." Benjamin Higgins, गरीबी मुर्गी भी है और अंडा भी। इस तरह गरीबी "कारण" और "परिणाम" दोनों है

एक ओर गरीबी आर्थिक स्तर पर आय, पूंजी तथा साधनों की कमी के कारण प्राप्त होती है दूसरी ओर गरीबी गैर-आर्थिक स्तर पर नवीनता को स्वीकार न करने, उद्यमशीलता एवं वैज्ञानिक शोध के अभाव के रूप में प्राप्त होती है।

आर्थिक विकास के गैर आर्थिक कारक इस प्रकार हैं :—

① सामाजिक एवं संस्थागत कारक (Social and Institutional Factors)

(a) जाति प्रथा (b) छुआछूत (c) संयुक्त परिवार प्रणाली (d) उत्तराधिकार के नियम (e) भूमि व सम्पत्ति के प्रति मोह (f) अन्धविश्वास (g) रूढ़िवादिता व धार्मिक प्रबंध (h) परिवर्तन व नये विचार के प्रति विरक्ति और उसका विरोध (i) झूठी शान-शौकत (j) सामाजिक अपव्यय (k) सामाजिक मनोवृत्तियों व सामाजिक मूल्यों का प्रतिकूल होना (l) परम्परावादी रीति रिवाजों, त्यौहारों में भाग लेने में आराम व संतोष पर आधारित बल तथा (m) लोगों का भाग्यवादी अधिक होना।

② कुशल व स्थिर प्रशासन (Efficient and stable Administration)

③ राजनैतिक अस्थिरता (Political Instability)

④ भ्रष्ट व अकुशल सरकार (Corrupt & Inefficient Government)

⑤ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ (International circumstances)

⑥ शिक्षा का प्रसार (Spread of Education)

⑦ धार्मिक घटक (Religious Factors)

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में आर्थिक तत्व व गैर आर्थिक तत्व परस्पर पूरक हैं और अर्थव्यवस्था के विकास में दोनों अपना सापेक्षिक (~~Relative contribution~~) योगदान (Relative contribution) करते हैं। आर्थिक तत्व अगर necessary factor है तब गैर आर्थिक घटक sufficient factor हैं।

——— X ———

(1) Name of the course :- M A ECONOMICS, PART-I

(2) Paper - VI (ECONOMICS of Growth, Development & Planning)

(3) TOPIC - VICIOUS CIRCLE OF POVERTY

(4) written by :- Dr (Prof.) Durga Nand Jha
course-co-ordinator
ECONOMICS, NOU

निर्धनता के दुश्चक्र से आशय (Meaning of vicious Circle of Poverty)

निर्धनता का कारण एवं परिणाम स्वयं निर्धनता ही है। निर्धनता का दुश्चक्र एक ऐसी वृत्ताकार प्रक्रिया है जिसका प्रारम्भ निर्धनता से होता है और अन्त भी निर्धनता के रूप में ही होता है। निर्धनता एवं बिमारी एक दुश्चक्र में परस्पर आबद्ध थे। लोग इसलिए बीमार थे क्योंकि वे गरीब थे। वे गरीब इसलिए हो गये क्योंकि वे बीमार थे। ये और अधिक इसलिए गरीब होते चले गए क्योंकि वे बीमार बने रहे और उनकी उत्तरोत्तर बीमारी का कारण उनकी गरीबी थी।

Ragnar Nurkse सम्भवतया पहले अर्थशास्त्री थे जिसने निर्धनता के दुश्चक्र को सही ढंग से इस प्रकार स्पष्ट करने का प्रयास किया है :-

"निर्धनता के दुश्चक्र का अर्थ नक्षत्र-मण्डल के समान वृत्ताकार ढंग से घूमती हुई ऐसी शक्तियों से है जो एक-दूसरे पर इस प्रकार क्रिया-प्रतिक्रिया करती है कि एक निर्धन देश निर्धनता की अवस्था में ही बना रहता है।" उदाहरण के लिए एक निर्धन व्यक्ति को खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता, स्वास्थ्य की कमी के

कारण वह निर्बल हो जाता है। शारीरिक रूप से निर्बल होने पर उसकी कार्य-क्षमता कम होने लगती है जिसका अर्थ यह है कि वह निर्धन है। "एक देश इसलिए निर्धन है क्योंकि वह निर्धन है" (A country is poor because it is poor).

निर्धनता के दुश्चक्र की विशेषताएँ

(1) निर्धनता का कारण व परिणाम स्वयं निर्धनता है।

(2) निर्धनता अपने प्रारम्भिक बिन्दु से अन्तिम बिन्दु तक वृत्ताकार (circular) ढंग से क्रिया व प्रतिक्रिया करती हुई बढ़ती है।

(3) इसका प्रभाव संचयी होता है अर्थात एक स्तर पर पाई जाने वाली निर्धनता अगले स्तर पर और भी अधिक घातक होने लगती है।

(4) यह एक ऐसी लगातार प्रक्रिया है जो सम्बन्धित घटकों को सदैव नीचे की ओर ढकेलती है।

(5) निर्धनता के दुश्चक्र की शुरुआत एक नकारात्मक घटक की उपस्थिति से होती है, और यह घटक अगले नकारात्मक घटक का कारण व परिणाम दोनों होता है।

गरीबी के दुश्चक्र (vicious circle) prof. NURKSE ने मांग तथा पूर्ति दोनों पक्षों के आधार पर की है—

गरीबी के दुश्चक्र का पूर्ति पक्ष (Supply Aspect of the vicious circle of poverty)

प्रो. नर्कस के अनुसार अल्पविकसित देशों में आय की न्यून मात्रा (अर्थात प्रति व्यक्ति आय कम होने के कारण) से बचत की क्षमता कम है। किन्तु आय की कमी अर्थव्यवस्था में अल्प उत्पादन का परिणाम है और अल्प उत्पादकता प्रायः पूंजी की कमी के कारण होती है। पिछड़े देशों में प्रति व्यक्ति आय कम होने पर बचत करने की क्षमता (शक्ति) कम होती है। प्रति व्यक्ति आय इसलिए कम होती है क्योंकि उत्पादकता कम होती है। उत्पादकता इसलिए कम होती है कि विनियोग कम होता है और विनियोग की कमी का कारण बचत की मात्रा का कम होना है। बचत स्वयं लोगों की

बचत करने की शक्ति पर निर्भर करती है जो कि पहले से ही कम है। बचत क्षमता (saving capacity) इसलिए कम होती है क्योंकि प्रति व्यक्ति आय कम है और इस प्रकार यह चक्र पूरा हो जाता है जैसा कि चित्र संख्या - 01 में स्पष्ट है -

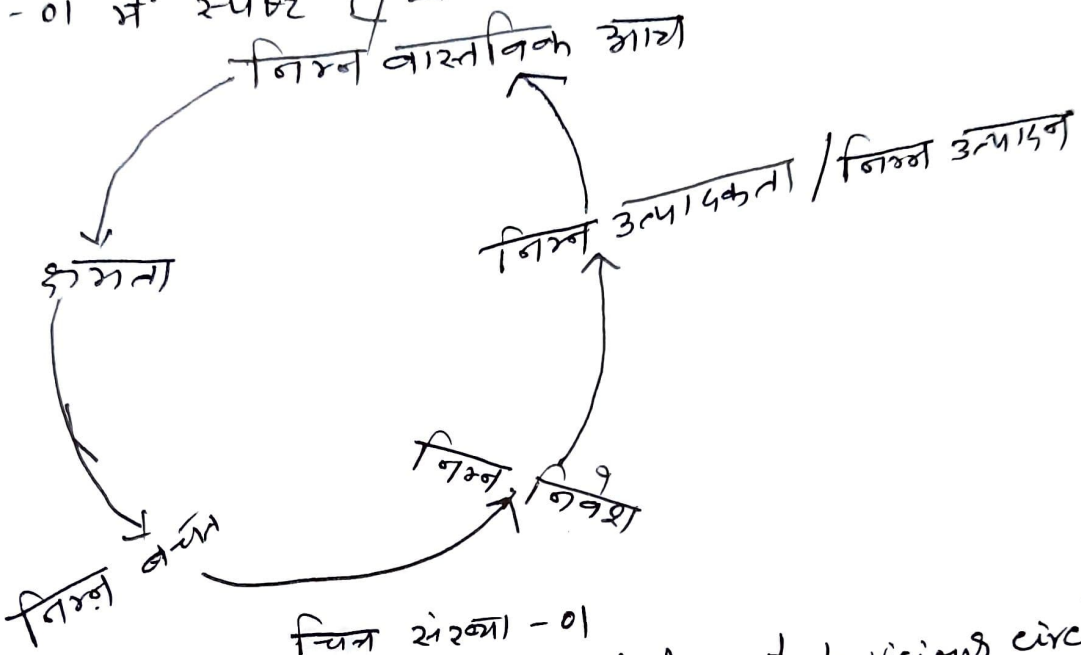

चित्र संख्या - 01

गरीबी के दुष्चक्र का मांग पक्ष (Demand Aspect of Vicious circle of Poverty) :-

किसी अर्थव्यवस्था का आर्थिक विकास केवल बचत तथा पूंजी पर ही निर्भर नहीं करता है इसके साथ ही उत्पादित वस्तु की मांग अथवा निवेश-प्रेरणा का होना भी बहुत आवश्यक है। प्रो. नर्क्स - मांग पक्ष भी दुष्चक्र को प्रभावित करता है। इन देशों में वास्तविक आय (Y) कम होती है → फलस्वरूप लोगों की क्रय शक्ति कम है → मांग कम होती है → निवेश की प्रेरणा कम मिलती है → परिणामस्वरूप कोई भी साहसी उत्पादन कार्य में पूंजी का निवेश नहीं करना चाहता → निवेश में कमी → इसके परिणामस्वरूप देश के कुल उत्पादन व उत्पादकता कम बनी रहती है जिसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय कम होता है तथा लोग गरीब के गरीब ही रह जाते हैं।

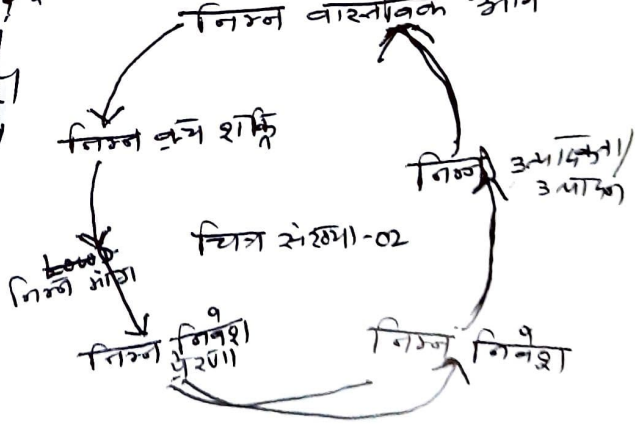

चित्र संख्या - 02

—— X ——

Name of the course :- MA Economics, PART-1
Paper - VI (Economics of Growth, Development & planning)
~~Titele~~
Title :- How to break vicious circle of poverty?

written by :- Prof (Dr.) DURGA NAND JHA,
Course co-ordinator, Economics
NOU

——x——

प्रो. गुन्नार मिर्डल ने निर्धनता के कुचक्र के संचयी प्रक्रिया व एकतरफा नकारात्मक स्वरूप की आलोचना करते हुए कहा है कि यह आवश्यक नहीं कि निर्धनता का ~~कु~~ यह कुचक्र सदैव एक ही दिशा अर्थात नीचे की ओर अग्रसर होता रहे। इसका कारण यह है कि प्रत्येक आर्थिक प्रक्रिया के उपरान्त एक स्थिति विराम व साम्य (Equilibrium) की होती है जहाँ पर सभी आर्थिक घटक निश्चल बने रहते हैं और इस बिन्दु पर विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ एक-दूसरे के साथ ~~वक~~ गठबन्धन बनाये रहती हैं। ऐसी हालत में सम्भव हो सकता है कि किसी घटक विशेष के प्रभावपूर्ण धक्के से अर्थव्यवस्था कोई नया मोड़ (धनात्मक) लेकर स्थिति को पूर्णतया बदल दे।

इस कुचक्र को तोड़ा जा सकता है। कैसे?

इस सम्बन्ध में किए जाने वाले प्रयत्नों की रूप-रेखा इस प्रकार दी जा सकती है —

(1) सन्तुलित विकास की नीति (Balanced growth policy) के आधार पर उपलब्ध पूंजी का विस्तृत उपयोग किया जाए अर्थात ज्यादा से ज्यादा उद्योगों में पूंजी का विनियोग करना चाहिए। इसका लाभ यह होता है कि विभिन्न उद्योग एक-दूसरे के लिए परस्पर मांग उत्पन्न करते हैं और इसके फलस्वरूप बाजार की अपूर्णताएँ समाप्त होने लगती हैं। उपलब्ध पूंजी का सामाजिक उपरिपूंजी (SOC) वाले बुनियादी उद्योगों में उपयोग किया जाए। इसका लाभ यह होगा कि विभिन्न उद्योग एक-दूसरे के लिए

का अवसर प्राप्त होगा।

(2) घरेलू क्षेत्रों में पूंजी निर्माण की गति प्रदान करने के प्रयत्न किये जाने चाहिए जो इस प्रकार हैं—
(i) वास्तविक बचतों की दर में वृद्धि करके (ii) बचत द्वारा पूंजी संचय में वृद्धि करके (iii) बचतों को गतिशील बनाना (iv) बचतों का निर्देशन ठीक ढंग से करके (v) उपलब्ध पूंजी का अच्छतर उपयोग करना।

(3) विकसित तकनीक को कुछ क्षेत्रों में लागू करने व परम्परागत तकनीक में यथासम्भव सुधार करने की भी आवश्यकता है।

(4) निर्यात योग्य उद्योगों की स्थापना एवं विकास करके।

(5) उत्पत्ति के साधनों विशेषकर श्रम व प्राकृतिक साधनों का सर्वोपयुक्त ढंग से तथा पूर्ण उपयोग करके।

(6) उद्यमशीलता की कमी के कारण सरकारी क्षेत्रको बढ़ावा देकर।

(7) शिक्षा का प्रसार और सामाजिक व संस्थागत ढाँचे में परिवर्तन करके।

(8) आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत विकास वित्त के लिए करारोपण हीनार्थ प्रबन्धन, बैंकिंग व्यवस्था का विकास, विदेशी पूंजी का आयात और अपसंचित साधनों (Hoarded Resources) का उपयोग आदि मौद्रिक उपायों को अमल में लाकर

(9) हर हाथ को काम देकर

उपर्युक्त प्रयासों में हर हाथ को काम अथवा रोजगार के अवसर प्रदान करके सरकार चाहे तो अल्पकाल में ही गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ने का सार्थक प्रयास कर सकती है।

— X —